A–0277

Total Pages : 3 **Roll No. .....**

MAJY-505

MA Jyotish (MAJY)

(भारतीय ज्योतिष का परिचय एवं इतिहास-02)

Examination, June 2025

Time : 2:00 Hrs. Max. Marks : 70

नोट :— यह प्रश्न-पत्र सत्तर (70) अंकों का है, जो दो (02) खण्डों 'क' तथा 'ख' में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों को हल करना है। ***परीक्षार्थी अपने प्रश्नों के उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका तक ही सीमित रखें। कोई अतिरिक्त (बी) उत्तर-पुस्तिका जारी नहीं की जायेगी।***

खण्ड–क

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न) 2×19=38

नोट :— खण्ड 'क' में पाँच (05) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए उन्नीस (19) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल **दो** (02) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. अर्वाचीनप मत के अनुसार सृष्टि के सिद्धान्त का वर्णन कीजिए।

2. सूर्य के भौतिक स्वरूपों का वर्णन कीजिए।

3. काल को परिभाषित करते हुए उसके भेदों का विस्तृत विवेचन कीजिए।

4. ग्रहों की शांति के लिए रत्नों का धारण कब और कैसे करना चाहिए ? वर्णन कीजिए।

5. जातक के रोग निदान में ज्योतिषशास्त्र किस प्रकार सहायता करता है ? वर्णन कीजिए।

खण्ड–ख

(लघु उत्तरीय प्रश्न) 4×8=32

नोट :– खण्ड 'ख' में आठ (08) लघु उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए आठ (08) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल **चार** (04) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. प्राचीन मत के अनुसार ग्रह कक्षा क्रम का प्रतिपादन कीजिए।

2. काल के भेदों का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

3. ज्योतिशास्त्र छात्रों के अध्ययन क्षेत्र निर्धारण में किस प्रकार सहायता करता है ? स्पष्ट कीजिए।

4. सामाजिक उन्नति में ज्योतिषशास्त्र की भूमिकाओं को बताइए।

5. आधुनिक मत के अनुसार प्रलय के सिद्धान्तों का संक्षिप्त परिचय कीजिए।

6. रोग का विचार किस-किस भाव से किया जाता है ? प्रतिपादन कीजिए।

7. चक्षु रोग का कारण एवं निदान ज्योतिषशास्त्र के अनुसार कीजिए।

8. पृथ्वी के स्वरूप को बताते हुए गति के सिद्धान्तों का निरूपण कीजिए।

****